श्रीमति त्रिशला (दीपाली) वडकुल
W/o श्री दीपक वडकुल
सागर

निबंध (1)

सादर जयजिनेन्द्र

[1] पाठशाला का उद्देश्य [2] पाठशाला अध्यापक की विशेषताएँ
[3] वर्तमान समय अनुसार किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया जाएँ?
आइए अब हम चलते है निबंध के मुख्य बिन्दुओं समाहित करते हुए प्रस्तावना की ओर –

प्रस्तावना– वैसे तो पाठशाला लगभग सब मंदिरो में चलती है लेकिन मेरे अनुसार आदर्श पाठशाला वह होनी चाहिए जिसमें बच्चों को "भक्त से भगवान बनने का मार्ग प्रशस्त हो।" बच्चों को नैतिक शिक्षा के साथ जैन धर्म का मूलभूत सिद्धांत "तू स्वयं भगवान है।" इस तरह मूल सिद्धांत बच्चे अपने जीवन में ला सकें। और हमारा तीसरा बिन्दु वर्तमान समय में बच्चों को किस पद्धति से पढ़ाया जाए, तो इस संदर्भ में यूं कहो कि बच्चों की प्रथम पाठशाला तो उसकी माँ होती है और दूसरी मानव निर्माण में हमारी धार्मिक पाठशाला का होता है पाठशाला में बच्चों के अध्ययन में रुचि इस तरह हो "बच्चों को पाठशाला मजदूरी नही जरूरी लगे।" इन सब का हमें ध्यान रखना चाहिए। आइए हम देखते हैं निबंध के मुख्य बिन्दु

पाठशाला का उद्देश्य– कहा जाता है विद्यालय और पाठशाला दोनों ही ज्ञान के केंद्र होते है। जीवन निर्माण, राष्ट्र निर्माण एवं समाज की मुख्य धुरी होते हैं पाठशाला को हम संस्कार शाला भी कहते हैं। पाठशाला ही वह स्थान है जहाँ से संस्कारों का बीजारोपण होता है क्योंकि धार्मिक शिक्षा के बिना संस्कारों का शुद्धिकरण संभव नही है। हमारा मुख्य उद्देश्य, जैन धर्म के मूल सिद्धांत सभी इसी पाठशाला से पूरे होंगे हमारे बड़े पंडित जी कहते है– "संस्कार बिना सुविधाएँ पतन का कारण है।" इस तरह के नैतिक संस्कार के साथ धार्मिक संस्कार भी हमारी पाठशाला से मिलेंगे। धर्मनिष्ठ संस्कारों से आत्मा को पल्लवित करना है तो पाठशाला का ही सहारा लेना पड़ेगा। पाठशाला नही होगी तो हमारे बच्चे कैसे समझेंगे कि रात्रि भोजन क्यों नही करना, नित देव दर्शन करना, छना हुआ जल प्रयोग में लेना, इन सब बातों को कौन सिखायेगा ये सब हमारी पाठशाला ही तो बताएगी ना।

वैज्ञानिकों ने आज सिद्ध किया पानी में, या पानी की एक बूंद में 36450 जीव होते हैं लेकिन हमारा जैन सदियों से कहता है आया है पानी की 1 बूंद अनंत जीव होते हैं। यदि हम हमारे बच्चों को उनका बचपन से अंत तक संपूर्ण जीवन सुंदर एवं व्यवस्थित चाहते है हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे पाठशाला में तत्वज्ञान सीखे तो हम जैनों प्रथम कर्तव्य है कि बच्चों पाठशाला अवश्य भेजें। और इसका कृत, कारित, अनुमोदना, एवं तन मन धन से सहयोग करें। कहा भी जाता है कि "बच्चों को कार नहीं संस्कार दीजिए।" बच्चों को भक्त नहीं भगवान भी बनाना है। हमारी पाठशाला का उद्देश्य- "भक्त नहीं भगवान बनेंगे।" हमारे बड़े पंडित का कथन है- "कार्य स्वयं करें श्रेय दूसरों को दें।" बच्चे संस्कारों से ही धर्म, समाज एवं परिवार की गरिमा बढ़ाते हैं। पाठशाला के विषय में कुछ पंक्ति- "संस्कारशाला तो एक फैक्ट्री है जो सच्चे, सदाचारी और सुसंस्कारी व्यक्तित्व का निर्माण कर महत्वपूर्ण योगदान देती है।" ऐसी पाठशालाओं में बच्चे कैसे आए किस प्रकार अध्ययन को हम बढ़ावा दे और हम अपना मूल उद्देश्य पर पहुंच सकें। और भारतवर्ष की सभी पाठशालाओं का उद्देश्य यही है।

"जिस शक्कर में मिठास नहीं, वह शक्कर नहीं, जिस पुष्प में सुवास नहीं, वह पुष्प नहीं, जिस औषध में गुण नहीं, वह औषधि नहीं, और जिस मानव में सद्ज्ञान नहीं, वह मानव नहीं।" और ऐसे सद्ज्ञान को प्राप्त करने का हमारी पाठशाला का उद्देश्य है।

पाठशाला अध्यापक की विशेषताएँ:- हमारी पाठशाला को ज्ञान का केंद्र कहते हैं और पाठशाला अध्यापक को माँ के बाद उन्हीं को स्थान दिया गया है क्योंकि गुरु का स्थान बहुत ऊंचा होता है गुरु की महिमा कुछ इस कही गई-

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपकी गोविंद दियो बताय।।

इस दोहे में शायद गुरु की महिमा का बखान लगभग हो चुका है क्योंकि शिष्य के गुरु तो भगवान से भी ज्यादा महत्वपूर्ण होता है आज गुरु न होते शिष्य को भक्त भगवान बनने का मार्ग कौन बताता। पाठशाला में शिक्षकों को इस बात ध्यान रखना चाहिए- कि बच्चों का पाठशाला की ओर आकर्षण किस प्रकार हो। वो पाठशाला के लिए बच्चों

के आवागमन में परेशानी न हो इस बात ध्यान रखें एवं पाठशाला में अध्ययन में बच्चों की रूचि कैसे जागृत हो। सिर्फ क्रियाकांड नही अपितु मानव धर्म सत्कर्म, सत्य, अहिंसा की भी शिक्षा प्रदान की जावे संयम से जीवन कैसे जिया जाता है संयम, सदाचार का बहुत महत्व होता है ये सब हमारे पाठशाला शिक्षक में अवश्य होना ही चाहिए।

असंयमित जीवन बिना ब्रेक की गाड़ी है। भावी पीढ़ी को जैन धर्म के तत्व ज्ञान से परिचित कराएं और इस तरह सरलता से प्रस्तुत करें कि बच्चों पढ़ने में, समझने रूचि बनी रहे। पाठशाला में बच्चों हर तरह ध्यान रखना शिक्षक का प्रथम कर्तव्य है बच्चों को इतना वात्सल्य मिलना चाहिए जैसे एक माँ बच्चों का ध्यान रखती है पाठशाला में बच्चोंके साथ-साथ अभिवावकों का भी पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए जिससे वो बच्चों के साथ आए तो उनके लिए कुछ कक्षाएँ उनके लिए चलानी चाहिए उनके प्रोत्साहन के लिए पुरस्कार आदि की व्यवस्था करना चाहिए। आजकल बच्चे जिस आधुनिक तकनीक से पढ़ने में रूचि लें उसी अनुसार बच्चों की रूचि का ध्यान रखकर अध्ययन करावें। भरतचक्रवर्ती के सोलह स्वप्न में एक स्वप्न का फल ये है कि छोटे-छोटे बछड़े रथ को खींच रहे है जिनका मतलब आज छोटे बच्चे ही कल, भविष्य में जैन धर्म के रथ को चलायेंगे। जैन धर्म की ध्वजा इन्हीं के हाथों में है। साढ़े अठारह हजार वर्ष जैन शासन इन्ही भावी पीढ़ी दर पीढ़ी जयवंत होता रहेगा। क्योंकि इन्ही पाठशाला में से आचार्य कुंदकुंद, आचार्य अमृतचंद, पंडित टोडरमल, बनारसी दास जैसे अनमोल रत्न हमें इन्ही पाठशालाओं में से मिलेंगे। बस देर है कि हमें उनमें उन रत्नों उनकी असली अहमियत से परिचित करना, कराना। जैसे मूर्तिकार भगवान की प्रतिमा बनाता है तो उसे पत्थर में पहले ही भगवान दिखते हैं बस वो उसे तराश देता है उसी प्रकार शिक्षक को यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि वह भी उस मूर्तिकार की भाँति है जो पत्थर को भगवान की संज्ञा दिला देता है पाठशाला अध्यापक को छोटे बच्चो से लेकर बड़ो का सभी ध्यान रखना जिससे बच्चों से लेकर बड़ो सभी को लाभ मिले सभी लाभान्वित हो सके। रयणसार जी ग्रंथ में बहुत ही अच्छा वाक्य आया था। "माधुर्य गुण प्रीति" अर्थात मधुरता जहां होती है वहाँ अवश्य ही स्नेह होता है वात्सल्य हो होता है कहा भी जाता है जहाँ गुड़ होता है वहाँ मक्खियों

को बुलाने नही जाना पड़ता वह अपने आप आती है इसी बात ध्यान हम पाठशाला में नही अपितु हर जगह अपनायेंगे तो हमारा जीवन सार्थक हो जायेगा। ये सब विशेषताएं एक पाठशाला शिक्षक में अवश्य होनी चाहिए

वर्तमान समय अनुसार बच्चों को किस पद्धति से पढ़ाया जाए:-

यह विषय बहुत गंभीर है क्योंकि बच्चों रूचि न लेंगे पाठशालाएँ सूनी पड़ी रहती है। सबसे पहले तो बच्चों का मन पाठशाला में लगे इस बात हरसंभव प्रयास करना चाहिए क्योंकि बच्चे के संस्कार यहीं से पड़ेंगे हमने बड़े बड़े मंदिर तो बना लिए लेकिन भविष्य में भक्त ही गायब हो जाए। हमारे पूर्वजों और बड़ो की देन है कि आज जिनमंदिर उपलब्ध है हर जगह लगभग। लेकिन फिर भी कुछ लोग देवदर्शन इक्का तक नही करते। दोष उनका नही क्योंकि उन्हें उनके अभिभावकों ने पाठशाला नही भेजा। सबसे बड़ी बात आज देखने मिलती है हर चीज में बुराई देखता है इंसान, लेकिन हमें हमारे बच्चों को सही मार्ग बताना है कुछ बातें जीवन में जरूर अपनी अपनानी चाहिए "दोषवादे च मौनं।" यही बात हमें बच्चोंको सिखानी है कार्य स्वयं करें दोष दूसरों को दें। किसी बुराई दिखे तो मौन रहिए हम अपने जीवन गुरूओं की बातों को जैनागम को मानकर चलेंगे उसी रीति से बच्चों को पठन पाठन करवायेंगे तो निश्चित ही हमें सफलता अवश्य मिलेगी हमारे बच्चे किसी उदाहरण से जल्दी समझते है हम अपने महापुरूषों, चौबीस तीर्थंकर, नारायण प्रतिनारायण, बलभद्र, हमारी सतियों इन सबके उदाहरण हमारे जीवन के सबसे बड़े आदर्श है। यदि बच्चे प्रोजेक्टर आदि पर दिखाकर छोटी छोटी कहानियाँ जल्दी सीखते है समझते है हमें उन सब बातों का ध्यान रखना होगा जिससे हमारी पाठशाला संस्कारशाला भरी रहे। कहा जाता है साम, दाम, दण्ड, भेद हमें सब वो तरीके, वो उपाय अपनाने चाहिए जिससे ज्यादा से ज्यादा बच्चें आएं और सच्चा मार्ग पाकर लाभान्वित हों और भविष्य में भावी पीढ़ी को संदेश दें कहते है गुरू नारियल की भाँति होता है जो ऊपर से सख्त होता है लेकिन अंदर से नर्म होता है और मीठा भी होता है जिस प्रकार कुम्हार घड़े को अंदर से हाथ लगाकर ठोकता है उसी प्रकार शिष्य को भी गुरू निखारने के लिए थोड़ी बहुत डाट भी लगाता है। इस प्रकार जिस भी तरीके से

बच्चे पाठशाला आएँ उनकी रुचि अनुसार हमें उनका ध्यान रखकर पाठशालाएँ संचालित करनी चाहिएँ। कहीं ऐसा न हो पाठशालाएँ जिन मंदिर तो हमने बहुत बनवा दिए लेकिन हम स्वयं ही पालन नहीं करेंगे आगामी पीढ़ी कैसे करेगी। हमने "भगवान तो विराजमान बहुत करवा दिए लेकिन उनका जैसा बनने का मार्ग बताना भूल गए।" हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए कि हमारी पाठशाला हमेशा हरी भरी रहे।

उपसंहार - यदि हम चाहते हैं हमारे बच्चे संस्कारवान बने तो अवश्य ही हमें पाठशाला के उद्देश्य, उसकी शिक्षण पद्धति, इन सबमें हम सभी तन मन धन से सहयोग करें पाठशाला में बच्चों की वह मजबूत नींव भरी जाती है जहाँ पूरा जीवन महक उठता है अभी से हम सब प्रयास करेंगे तब अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। यदि हमने पाठशाला नहीं भेजा अपने बच्चों को तो कौन हमारा समाधिमरण करवाएगा। हमें संस्कारों के बीज शुरू से बोने पड़ेंगे तब ही हमें उसका फल मिलेगा यदि आम चाहते हैं आम ही बीज लगाना पड़ेगा।

"बोएँ पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होए।" हम सबका कर्तव्य है कि पाठशाला मात्र उनकी जिम्मेदारी नहीं जो पढ़ते पढ़ाते हैं हमारी जैन समाज प्रबुद्ध समाज है हम सबका प्रथम कर्तव्य है कि यह देवशास्त्र गुरु की प्रभावना का कार्य, एवं ज्ञानदान में अपना अमूल्य समय अवश्य दें बच्चों शुरू से अच्छी संगति अच्छे संस्कार डालें ज्ञान दान से बड़ा कोई दान नहीं होता। जिससे जो बने वो सहयोग अवश्य दें अच्छी संगति हमारी पाठशाला में अवश्य मिलेगी जब बचपन से संगत अच्छी होगी तो जीवन सोने सा चमकेगा। कदली सीप भुजंगमुख, स्वाती एक गुण तीन।
जैसी संगति बैठिए, वैसा ही फल दीन।

अच्छी संगति निश्चित ही पाठशाला में ही मिलेगी और हमारा जीवन, बच्चों का जीवन बचपन से अंत तक अवश्य सुधरेगा। पाठशाला के संस्कार इस भव को सुधारेंगे, अपितु भव भव सुधारेंगे। समय की सीमा का ध्यान रखते हुए मैं अपनी बात से एक अनुरोध करती हूँ कि बच्चों के जीवन का मार्ग प्रशस्त करने वाली संस्कारशाला में अपने बच्चों को वात्सल्य के साथ अवश्य - अवश्य और अवश्य ही भेजें और इस बात का "ध्यान रखें कट्टरवाद, पंथवाद न पनपने पाए।"

॥ जय जिनेन्द्र ॥